दिपिंदर कपूर

भारत में आंध्र प्रदेश अरसे से ईसाइयत के प्रभाव-प्रसार के लिहाज से निशाने पर रहा है। तिरुपति तो खासकर जहां से उन्होंने भारत के सारे हिन्दुओं के धर्मांतरण का मंसूबा बांधा।

—डेविड फ्राउले, वेद मर्मज्ञ@davidfrawleyved

पौराणिक काल में ज्यादा होती थी कद्र

पानी प्रकृति की अनमोल धरोहर है। पृथ्वी पर पानी के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। पृथ्वी ग्रह पर 71 प्रतिशत पानी है तो 29 प्रतिशत जमीन। इसके बावजूद भारत ही नहीं पूरे विश्व में पानी के लिए त्राहिमाम मचा हुआ है। जनसंख्या में बढ़ोतरी हुई तो हमारी जीवनशैली भी बदलती चली गई। लोग एक बाल्टी पानी खर्च करने की जगह 10 बाल्टी पानी खर्च करने लगे हैं। पानी की ज्यादा खपत करने वाले लोग अपने को विकसित और संपन्न समझते हैं। बड़े शहरों में प्रति व्यक्ति पानी की खपत अधिक हो रही है। इसकी वजह से पानी का संकट खड़ा हो गया है। हमने अपने पानी के संस्कार भुला दिए हैं, और पानी की कद्र नहीं कर रहे।

पानी की समस्या से बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, इंदौर, जयपुर, नागपुर, लखनऊ जैसे शहरों सहित देश के करीब 100 शहर संकट में हैं। हाल में बेंगलुरु में पानी की समस्या चर्चित रही। प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुनीता नारायण ने बेंगलुरु जल संकट पर कहा है कि अगर अभी नहीं संभले तो आज बेंगलुरु तो कल आपका शहर भी पानी के संकट से ग्रस्त हो सकता है। राजधानी दिल्ली को ही देख लीजिए। दिल्ली के बीचोंबीच से एक बड़ी नदी निकलती है। फिर भी इस बड़े शहर के लोग प्यासे हैं क्योंकि पानी के इस्तेमाल और सहेजने का तरीका जो ठीक नहीं है। भारत में पौराणिक काल से ही पानी की हम कद्र करते थे। कोई भी धर्म हो, हर धर्म में संस्कारों के समय पानी और पानी के स्रोतों की मौजूदगी रही है। हिन्दू धर्म में तो शुभ कार्यों में भगवान श्री गणेश के पूजन के बाद वरुण देव यानी पानी के देवता के रूप में जल कलश पूजने का शास्त्रों में विधि-विधान है। इससे साबित होता है कि जल के प्रति सम्मान हमारी पौराणिक संस्कृति और संस्कार में समाहित है। कल कल बहती नदियों के किनारे मानव सभ्यता और संस्कृति पनपी है। भारत की हर सभ्यता का पानी के किनारे ही आगाज रहा। पहाड़ों से धरती के मैदानी इलाकों तक पानी लाने वाली नदियों और पानी के उन स्रोतों को भी समाज ने पुराकाल से बड़ा सम्मान दिया है। इतना ही नहीं, भारत की संस्कृति ऐसी है कि हमेशा से ही धरती पर पानी के प्राकृतिक और कृत्रिम स्रोत यथा झील, झरने, बावड़ी, कुएं, जलाशयों, तालाबों आदि को पीढ़ी दर पीढ़ी सम्मान देकर पूजती रही है।

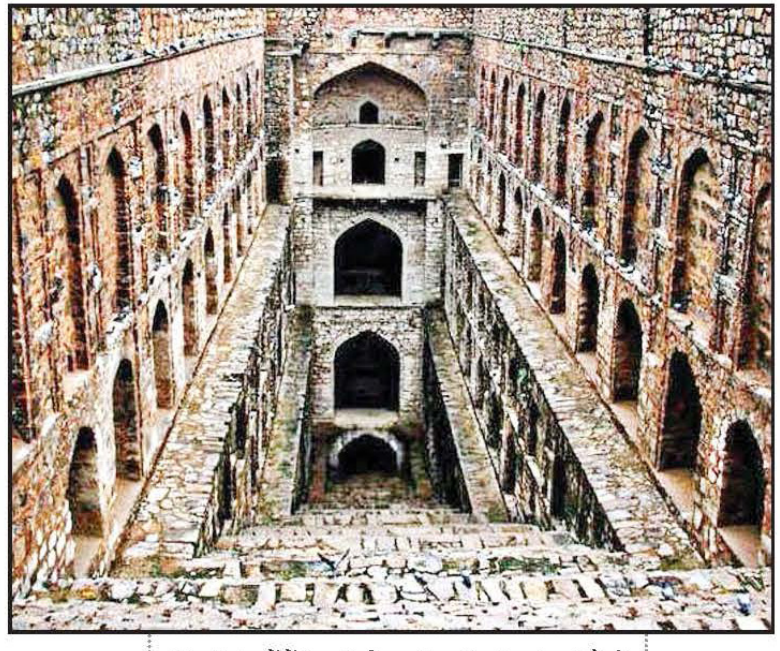

भारत की प्राचीन जीवनशैली में मनुष्य ने हमेशा से प्रकृति को निजी जीवन में ही नहीं अपितु अपने मूल में सहेजा है। अपने जल संसाधनों को कैसे साफ और स्वच्छ रखा जाए पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी दैनिक जीवनशैली में समा गया। जब ट्यूबवैल लगाने की तकनीक नहीं थी तो जगह-जगह कुआं खोदकर भूजल का इस्तेमाल किया जाता था अन्यथा वर्षा जल को संचित कर बावड़ी, झील, जलाशय और तालाबों में जल का संरक्षण किया करते थे। नदी और झरनों के किनारे बसे शहर और गांव इन जल संसाधनों का बेहतरीन तरीके से इस्तेमाल करते थे। पानी की समस्याएं तब भी थीं लेकिन इतनी नहीं थीं जितनी आज पानी के संसाधनों को ठीक से न सहेजने और उनके अंधाधुंध इस्तेमाल के कारण बढ़ गई हैं।

भारत का करीब 80% पानी भूजल से आता है। विशेषज्ञों का कहना है कि ठीक प्रबंधन न होने से भारत में भूजल संकट बरकरार है। हालांकि देश ने 2023 में भूजल पर अपनी निर्भरता को कुछ हद तक कम किया है। फिर भी भूजल दोहन के हॉटस्पॉट राज्यों में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दादर नगर हवेली के अलावा दिल्ली भी है, जो जल रिचार्ज की अपेक्षा भूजल की निकासी अधिक करते हैं। वहीं सरकार बड़ी धनराशि खर्च कर जल जीवन मिशन में पेयजल के 77.02 प्रतिशत ग्रामीण घरों यानी 14.86 करोड़ परिवारों को नल का कनेक्शन दे चुकी है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरन्मेंट (सीएसई) में वाटर डायरेक्टर दीपेंद्र कपूर बताते हैं कि देश के सामने जल संकट मुख्य रूप से पानी की कमी के कारण नहीं है, बल्कि जल संसाधनों के कुप्रबंधन से उत्पन्न हुआ है। दिल्ली में जल संकट को लेकर कपूर कहते हैं कि जल की बर्बादी को नियंत्रित करने के लिए उच्च उपयोग करने वाले उपभोक्ताओं की पहचान जरूरी है, जिन्हें फिर से अपनी खपत कम करने के लिए बाध्य किया जा सकता है जबकि बागवानी, निर्माण और उद्योग में उपयोग के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले जल के स्थान पर उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि दक्षिण दिल्ली के संगम विहार की घनी नियोजित बस्ती में जलापूर्ति स्वच्छता और जल प्रबंधन की चुनौतियों पर सीएसई के अध्ययन से पता चला है कि 10 लाख से अधिक की आबादी वाली इस बस्ती में प्रति व्यक्ति प्रति दिन 45 लीटर जलापूर्ति हो रही है जबकि केंद्र और दिल्ली सरकार के आपूर्ति के आंकड़े अलग-अलग और वर्तमान आपूर्ति से कहीं अधिक हैं। कपूर ने बताया कि राजधानी दिल्ली में विकेंद्रीकृत जल आपूर्ति और अपशिष्ट जल उपचार की आवश्यकता है। दिल्ली में 37 एसटीपी हैं, जो प्रति दिन लगभग 1000 मिलियन गैलन अपशिष्ट जल का उपचार करते हैं, और राष्ट्रीय राजधानी को लगभग 400 मिलियन गैलन उपचारित जल यमुना में वापस लौटाना पड़ता है। बागवानी और सिंचाई के लिए उपयोग करने के बाद बाकी बचे उपचारित जल को भूजल को रिचार्ज करने के लिए उपयोग करने की जरूरत है।

हमारी अर्बन प्लानिंग में वाटर और सेनिटेशन प्लानिंग दुरुस्त नहीं है। भूजल घटने की समस्या दूर करने के लिए शहरों को अपने वेस्ट वाटर से जमीन के वाटर को रिचार्ज करने की जरूरत है। इसके लिए योजनाएं और कार्यक्रम बनाने पड़ेंगे। हर क्षेत्र में भूजल की मैपिंग करने की जरूरत है। यह भी देखना होगा कि कहां पर जल को रिचार्ज करने या निकालने की जरूरत है और कहां नहीं। जल आपूर्ति संस्थाओं का दायरा बढ़ाना पड़ेगा, अब ये भूजल मैपिंग भी करें और रिचार्ज हेतु पानी की जिम्मेवारी भी लें। तभी पानी के संकट से राहत मिल सकेगी।

(पत्रकार अनिरुद्ध गौड़ के विशेष इनपुट के साथ)

■

भारत की प्राचीन जीवनशैली में मनुष्य ने हमेशा से ही प्रकृति को निजी जीवन में ही नहीं अपितु अपने मूल में सहेजा है। अपने जल संसाधनों को कैसे साफ और स्वच्छ रखा जाए, पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी दैनिक जीवनशैली में समा गया। जब ट्यूबवैल लगाने की तकनीक नहीं थी तो जगह-जगह कुआं खोद कर भूजल का इस्तेमाल किया जाता था अन्यथा वर्षा जल को संचित कर बावड़ी, झील, जलाशय और तालाबों में जल का संरक्षण किया करते थे। नदी और झरनों के किनारे बसे शहर और गांव इन जल संसाधनों का बेहतरीन तरीके से इस्तेमाल करते थे